IJARSCT

International Journal of Advanced Research in Science, Communication and Technology

International Open-Access, Double-Blind, Peer-Reviewed, Refereed, Multidisciplinary Online Journal

ISSN: 2581-9429

Volume 5, Issue 1, September 2025

Impact Factor: 7.67

आधुनिक मिथिला में सिक्की अथवा मूँज एवं बाँस से उपयोगिता के वस्तु निर्माण में निचली जाति के महिला की भूमिका

Mk- dqekjh l/;k

fo'ofo|ky; e¨fFkyh foHkkx]

ch-vkj-,- fcgkj fo'ofo|ky;] eqt¶Qjiqj

Introduction:-

प्राचीन काल से ही मिथिला कलात्मक वस्तु निर्माण का केन्द्र रहा है। आज के दौर में कलात्मक वस्तु निर्माण एवं क्रम में व्यापक पैमाने पर संकट पूर्ण स्थिति में है। मिथिला अतीत एवं वर्तमान में कलात्मक वस्तुओं की चर्चा–परिचर्चाएँ होती रही है। एक समय था जब मिथिला में विशेष समारोह के अवसर पर जो उपयोगिता के वस्तु का निर्माण होता था वो अत्यन्त रंग–बिरंगे चित्र एवं आकृति से सज्जित किया जाता था जिसमें सिक्की के रंग–बिरंगे बर्त्तन, पौती, सौन्दर्य–प्रसाधन, पनबट्टी तथा पसाहिन की पौती, पंखा, आदि एवं बांस का डाला, सूप, कोनिया, विवाह के रस्म में काम आने वाले बांस के अनेक प्रकार के सुन्दर अलंकारिक बर्त्तन, कृषि कार्य में प्रयुकत होने वाले बर्त्तन, मछली पकड़ने के कार्य (मखाना छानने के कार्य में प्रयुक्त होने वाले बांस के बर्त्तन, शराब (हड़िया) छानने की वस्तु, पक्षियों को पालनेवाले पिंजड़ा से लेकर आधुनिक साज–सज्जा के रूप में प्रयुक्त होनेवाले वस्तु जैसे हैण्डबैग, बॉल हैंगिग, टेबुल मैट फूलदान, पत्रिका रखनेवाला स्टैड, फल रखनेवाली चंगेली, टेबल टैम्प ट्रे, ग्लास, खिलौने आदि।) एक समय था जब ये कला मिथिल के समृद्धि का सूचक था।

उत्तरोत्तर संरक्षण एवं आवश्यक प्रोत्साहन नहीं मिलने के कारण यद्यपि इस हस्तकला का ह्रास होता रहा। तथापि महिला में आपसी प्रतिस्पर्धा के फलस्वरूप ये कला–शैली अपने स्वस्थ परम्परा के संग जीवित रहा। कृषि प्रधान समाज में निचली जाति की महिलाओं द्वारा गेहूँ एवं पुआल के छिट्टा–पथिया को बनाया जाता है जिसमें अन्न रखने की व्यवस्था होती है। किन्तु मिथिला में कुश (सिक्की) अथवा मूँज के सुन्दर वस्तु के निर्माण का कार्य इन महिला एवं नवयुवतियों द्वारा प्राचीन काल से ही किया जाता रहा है जिसकी उपयोगिता प्रत्येक अवसर पर होती है। वस्तुतः इस सूक्ष्म–शोध परियोजना में यथास्थिति का अवलोकन के साथ–साथ इसेक उज्ज्वल भविष्य को भी सुनिश्चित करना है।

y{; ¼Objective½%&

मिथिला में प्राचीनकाल से प्रचलित सामाजिक रीति–रिवाज के अध्ययन करने पर ज्ञात होता है कि मिथिला की संस्कृति में कुछ विलक्षण पक्ष हैं जो उच्चवर्ग एवं निम्नवर्ग दोनों में व्याप्त हैं जो अन्य संस्कृति में नहीं मिलता है। मगर इस शोध में प्राचीन कालखण्ड का विवेचन का लक्ष्य नहीं है अपितु इन कला पर व्यावसायिकीकरण का क्या प्रभाव पड़ा एवं संरक्षण प्रदान करने के फलस्वरूप इसका कितना प्रचार हुआ को शोध के अन्तर्गत रखा जायेगा।

ikphu dky%&

वैदिक तथा स्मृति ग्रंथ में अध्ययन के पश्चात् ज्ञान होता है कि पूजा, विवाह आदि शुभ अवसर पर कुश का प्रयोजन होता था। स्मृति–ग्रन्थ तथा प्राचीन अभिलेख में धार्मिक समारोह के अवसर पर इसका उल्लेख मिलता है। तात्पर्य ये कि कुश अथवा मूँज घास से प्राचीन काल से ही लोग परिचित थे। इसी प्रकार बांस के भी उपयोगी वस्तुजात के निर्माण कार्य की प्रक्रिया

प्राचीन काल से ही समुन्नत थी बांस के वस्तु निर्माण को 'वेणु शिल्प' कहा जाता है। प्राचीन समाज एवं ग्रंथ से मनुष्य का आदिम संबंध रहा है। 'ऋग्वेद' मे अनेक शिल्पों के साथ वेणु शिल्प का उल्लेख मिलता है जिसमें धनुष निर्माण इस बात का साक्षी है। 'मनुस्मृति' वेणु शिल्पियों के लिए एक अलग वर्ग की चर्चा करता है।

''चाण्डालात् पाण्डुसोपाकस्त्वक्सार व्यवहारवान।
आहिण्डिको निषादेन वैदेध्यामेव जायते। (मनु. 10.37)

अर्थात् चाण्डाल से वैदेही में उत्पन्न 'पाण्डु सोपाक' कहलाते हैं, जो उस समय त्वक्सार (बाँस) के शिल्प का काम करते थे। बाँस का नाम 'त्वक्सार' भी है–

महाभारत, हरिवंश पुराण में भी वेणु शिल्प का ताप आया है। 'शुक्रनीति' यह ग्रन्थ छठी सदी का निर्मित बताया जाता है; क्योंकि गुप्त शासन के अनुसार ही इसमें मंत्रिपरिषद् आदि का उल्लेख है। जिसमें 64 कलाओं की चर्चा है, जिसमें शिल्प के दो भेद किये गए हैं– (1) कृति ज्ञान कला एवं (2) विज्ञान कला। जिसमें 'वेणु–शिल्प' और 'तृण–शिल्प' को 'कृतिज्ञान' कहते हैं।

or'eku dky%&

ये दोनों कला एवं इसकी उपयोगिता गरीब एवं अमीर दोनों के लिए एक समान है। भारत जैसे देश की जनता जो गरीब है उनके लिए यह प्राणाधार है। इसके सहारे शिल्प–निर्माण करके गरीब अपनी रोजी भली–भाँति चला सकते हैं। मिथिलांचल अपनी इन कलाओं के लिए प्राचीनकाल से ही प्रचलित है आजकल हस्तशिल्प का वाणिज्यिक व्यापार विदेशों में इसकी मांग चरम पर है जिसकी पहचान अब विद्वानों को भी महसूस हुई है। जिसमें इस कला के योगदान में विद्वानों का भी काफी सहयोग रहा। डॉ. जयकान्त मिश्र सर्वोपरि हैं, श्री उपेन्द्र महारथी, डॉ. उपेन्द्र ठाकुर आदि विद्वानों का विशेष रूप से इन कला के विकास में रहा। मिथिला में गरीबी के कारण रोगजार की तलाश में पलायन बहुत आरम्भ से ही होने लगा और कला का ह्रास होने लगा जिसे राज्य सरकार ने संरक्षण देते हुए कुटीर उद्योग का दर्जा तो दिया किन्तु आज भी उसे सही बाजार एवं सही प्रचार–प्रचार नही मिला। निचली जाति की महिलाएँ जितनी कला निपुण हैं उसमें उसका उसे न तो उसे आंशिक लाभ ही मिल पाता है और न ही उसे सहयोग राशि अन्य कलाओं जैसे मधुबनी पेंटिंग में विस्तार की वजह से मिल पाया। बहुत सारे ग्रामीण क्षेत्र दरभंगा, मधुबनी, सुपौल, सहरसा, पूर्णियाँ, खगड़िया से सटे सारे ग्रामीण क्षेत्रों में निचली जाति की महिलाएँ इन कलाओं में निपुण एवं आधुनिकीकरण के साथ कलाकृति निर्माण में संलग्न रहने के बावजूद आज भी अंधेरे की जिंदगी जी रही हैं। शोध के क्रम में इनको निस्पक्षतापूर्ण समाज के मानस पटल पर उजागर कर उसका स्पष्ट एवं निर्भीक मूल्यांकन करना।

शोध का तौर–तरीका (**Methodology**):–

Data Analysis - To Collect Data - पुस्तक और व्यक्तिगत सम्पर्क से जानकारी हासिल करना

Focus Group - To Visit the Community and Organization ग्रामीण एवं शहरी क्षेत्रों में कुटीर, लघु उद्योग संचालकों से एवं व्यक्तिगत सम्पर्क से तथ्यों एवं कलाकृतियों तथ्यों का संकलन किया जायेगा।

Depth Interview - To visit the individuals लेखक, कलाकार, संरक्षक, संचालक से साक्षात्कार

Qualitative Immersion - To understand the group and individuals- तटस्थ एवं निर्भीक मूल्यांकन

Direction observation - To observe the Field - जहाँ कहीं भी इन महिलाओं द्वारा निर्मित होता हो वहाँ पहुँचकर इसका रिपोर्ट संग्रह करना।

IJARSCT
International Journal of Advanced Research in Science, Communication and Technology
International Open-Access, Double-Blind, Peer-Reviewed, Refereed, Multidisciplinary Online Journal
ISSN: 2581-9429
Volume 5, Issue 1, September 2025
Impact Factor: 7.67

Compilation - Writing - विस्तृत लेखन

Typing & Spiral टंकन ओ बंधन।

Year Wise Plan of work and Targets to be achieved

इस सूक्ष्म–शोध परियोजना को चार भाग में बांटा गया है। चारों भाग–6–6 महीना का होगा–

1st Stage – पहले 6 मास शहरी भाग में कला केन्द्र एवं निचली जाति की महिलाओं द्वारा बनाए जाने वाले जगहों पर केन्द्रित होगी जिसमें मधुबनी, दरभंगा, सहरसा, सुपौल, पूर्णियाँ आदि जगहों में सचर्कित संस्था एवं व्यक्ति से साक्षात्कार तथ्य संकलन (मूल रचना एवं फोटो आदि)।

2nd Stage – दूसरे 6 मास में ग्रामीण क्षेत्र जैसे, बलियारी, बनगांव, पटोरी, सिसवार, पंचगछिया, कर्णपुर, सखपुर आदि गांव की महिलाओं से साक्षात्कार एवं तथ्य संकलन (मूल रचना, फोटो आदि)

3rd Stage – तीसरा 6–7 मास में संपूर्ण संकलित सामग्री का लेखन कार्य।

4th Stage – अंतिम भाग में सम्पूर्ण लिखित सामग्री का कम्प्यूटर टाइपिंग और संग ही संग फोटो का भी समावेश जहाँ आवश्यक होगा जोड़ा जाएगा।